हिन्दी (प्र०) / बी. ए. पार्ट-II / अध्ययन सामग्री /

डॉ० संतोष कुमार, सहायक प्राचार्य, हिन्दी विभाग,
भारती मंडन महाविद्यालय, रहिका, मधुबनी

दिनांक : 02.07.2021

पत्र : चतुर्थ / छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

यह दीप अकेला (काव्य) की व्याख्या का शेष.....

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युग संचय,
यह गोरस है : जीवन कामधेनु का अमृत-पूत पय,
यह अंकुर : फोड़ धरा को, रवि को तकता निर्भय,
यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्म, अयुत :
इसको भी शक्ति को दो।
यह दीप, अकेला, स्नेह-भरा
है गर्व-भरा मदमाता ; पर
इसको भी पंक्ति को दे दो।

फिर कवि कहते है मैं जिस दीप को समाज को समर्पित करना चाहता हूँ वह कोई साधारण दीप नहीं है, बल्कि वह काल का मौना अर्थात् आलोक के अंधकार मिटाने वाला, युगों-युगों से संचित मधु है। जीवन रूपी कामधेनु का अमृत सदृश पवित्र दूध है, यह उस छोटे से अंकुर समान है जो धरती की छाती चिड़कर आता है और निर्भय आकाश की तरफ सूर्य को देखता है। अर्थात् वे कहते है कि यह कोई साधारण मानव नहीं है इसमें असीम जिजीविषा, संघर्ष करने की क्षमता, अपने अस्तित्व रक्षा का सामर्थ्य है। प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्म सदृश्य स्वयंभू है, किन्तु सृष्टि संचालन के लिए इस ब्रह्म रूप व्यक्ति का भी शक्ति के समक्ष समर्पण आवश्यक है। इसलिए इसे स्नेह भरे गर्व से मदमाते दीप (व्यक्ति) को पंक्ति (समाज) को समर्पित कर दो। फिर वे कहते हैं ——

यह वह विश्वास नहीं, जो अपनी लघुता में भी काँपा,
वो पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा,
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़ुवे तम में
यह सदा-द्रवित, चिर जागरूक, अनुरक्त नेत्र
उल्लम्ब-बाहु, यह चिर अखंड अपनापा।
जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय
इसको पंक्ति को दे दो
यह दीप, अकेला, स्नेह भरा
है गर्व-भरा मदमाता पर,
इसको भी पंक्ति को दे दो

कवि कहते है कि व्यक्ति अकेला होकर भी काफी कुछ है पर उसका समाज में विलय उसको और समाज दोनों को मजबूती प्रदान करता है। व्यक्ति में स्थित विश्वास है वह अडिग है, उसने कष्ट को सहा है उसे उसका पूर्ण अनुभव है। वह निंदा, बेइज्जती, बात न मानना के अंधेरे को भी चीर के आया है। वह द्रवित भी हो जाता है, वह जागरूक बनकर, प्रेम भरे नेत्रों से, अपनी उठी हुई बाँहो से वह अपनापन भी खुद में समेट के रखा है। उसमें ~~अपनापन भी~~ अपनेपन की भावना भी है। यह जानना चाहता है, यह बुद्धिमान है, यह श्रद्धा भावना रखता है; इसको शक्ति देने की आवश्यकता है अर्थात इसे समाज से जोड़कर इसको ~~~~ और मजबूत बना दो।

यह द्वीप अकेला है, इसमें प्रेम भी है, गर्व भी है, मस्ती भी है, पर यह अकेला है। यदि इसे पंक्ति (समाज) में स्थान मिल जाए तो इसका जीवन सार्थक हो जाएगा। यह विलय व्यक्ति का समाज में विलय है। यह व्यक्ति के आत्मबोध का विश्वबोध में रूपांतरण है। यह व्यष्टि का समष्टि में विलय का संदेश है।